International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 02-03-2026, Accepted: 02-04-2026, Published: 17-04-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 64-65

# भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में ईसाई शिक्षण संस्थानों का मुख्य योगदान

**डॉ. पूजा धामिजा[1], अर्चना विद्यानंद आठवले[2*]**
मार्गदर्शिका, एसोसिएट प्रोफेसर, फैकल्टी ऑफ़ आर्ट क्राफ्ट–सोशल साइंस, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान, भारत
शोधार्थी, हिंदी विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान, भारत

**सारांश**
भारत में आधुनिक शिक्षा का बीड़ा उठाने में ईसाई शिक्षण संस्थान का योगदान गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों रहा है। ईसाई शिक्षण संस्थान देश में सबसे अच्छे संगठित और प्रबंधित थे। इन संस्थानों ने आदिवासियों को बर्बरता से आधुनिकता की ओर बढ़ने में मदद की और इस तरह भारत सरकार के कंधों से भारी बोझ उतार दिया। भारत के युवाओं को शिक्षित करने में ईसाई शिक्षण संस्थान द्वारा बहुत बड़ा काम किया गया है। ईसाई शिक्षण संस्थान देश के युवाओं का विशेष ध्यान रखती थी, चाहे वे किसी भी लिंग, धर्म, रंग और जाति के हों और उनके लिए कई प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा संस्थान बनवाए थे।

**मूल शब्दः** भारतीय शिक्षा, ईसाई शिक्षण संस्थान

## प्रस्तावना
ऐतिहासिक रूप से, प्राचीन भारत में शैक्षणिक संस्थान निचली जातियाँ और आदिवासी शैक्षिक अवसर से वंचित थे। और इसलिए ईसाई शिक्षण संस्थान ने भारतीय समाज में प्रचलित इस प्रणाली का अनुभव किया और इन लोगों के लिए सेवा प्रदान करने का अपना फैसला किया। हालाँकि, जब उन्होंने इन लोगों की सेवा शुरू की, तो आबादी के अन्य वर्गों को भी उनसे कहीं अधिक लाभ हुआ।

## ईसाई शिक्षण संस्थानोंका योगदान
सेंट फ्रांसिस जेवियर भारत आने वाले पहले जेसुइट मिशन से थे और उन्होंने 1542 में भारतीय मिशन की शुरुआत की। ये स्कूल प्राथमिक शिक्षा की आधुनिक प्रणाली के अग्रदूत थे। यह सेंट फ्रांसिस जेवियर ही थे जिन्होंने अपने साथियों को हर गाँव में एक स्कूल बनवाने के लिए प्रेरित करके प्राथमिक शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया। ईसाई शिक्षण संस्थानोंने ने कई स्कूल और कॉलेज स्थापित किए। गोवा, अंगमले, कोचीन, वैपिन, क्रैंगानोर और बेसिन में 16वीं शताब्दी की शुरुआत से ही कई ईसाई कॉलेज मौजूद थे। जेसुइट्स ने 16वीं, 17वीं और 18वीं शताब्दी के दौरान सेंट फ्रांसिस जेवियर की विरासत का अनुसरण करते हुए भारत में कई शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना की और विद्वत्तापूर्ण गतिविधियों में लगे रहे। धीरे–धीरे देश के विभिन्न हिस्सों में कई कॉलेज स्थापित किए गए। शिक्षक प्रशिक्षण स्कूलों का विचार सबसे पहले ईसाई शिक्षण संस्थानोंने 16वीं शताब्दी की शुरुआत में स्थापित किया था। बोर्डिंग स्कूल की प्रणाली भी भारत में सबसे पहले जेसुइट्स द्वारा शुरू की गई थी। मिशनरी व्यावसायिक शिक्षा के भी अग्रदूत थे। इतना ही नहीं ईसाई शिक्षण संस्थानोंने भारतीय महिलाओं की शिक्षा के लिए भी बहुत काम किया। ईसाई मिशनरियों ने ही सबसे पहले महसूस किया कि ऐसी परिस्थितियों में कोई भी सुदृढ़ समुदाय नहीं बनाया जा सकता, जिसमें महिलाएं युवाओं को पढ़ाने और बीमारों को ठीक करने में अक्षम हों। इसलिए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि भारतीय महिलाओं की तीन प्रमुख ज़रूरतें, शिक्षिका, डॉक्टर और नर्स, शुरू में लगभग पूरी तरह से ईसाई महिलाओं द्वारा पूरी की जाती थीं।

## पश्चिमी शिक्षा की शुरूआत
मिशनरी भारत में पश्चिमी शैली की शिक्षा शुरू करने वाले पहले लोगों में से थे जिसमें विज्ञान गणित और साहित्य जैसे विषयों पर ध्यान केंद्रित किया गया था। उन्होंने अंग्रेजी माध्यम के स्कूल स्थापित किए जो बाद में सरकारी संस्थानों के लिए मॉडल बन गए। उन्होंने तर्कसंगत सोच और वैज्ञानिक जांच पर जोर दिया, जिससे भारतीय शिक्षा को आधुनिक बनाने में मदद मिली।

## स्कूलों और कॉलेजों की स्थापना
ईसाई शिक्षण संस्थानों ने कई प्रमुख संस्थानों की स्थापना की जिनमें से कई आज भी मौजूद हैंरू

- सेंट पॉल स्कूल दार्जिलिंग (1823) – भारत के सबसे पुराने पब्लिक स्कूलों में से एक।
- सेरामपुर कॉलेज (1818) – विलियम कैरी, जोशुआ मार्शमैन और विलियम वार्ड द्वारा स्थापित, यह संस्थान भारत में उच्च शिक्षा प्रदान करने वाले पहले संस्थानों में से एक था।
- स्कॉटिश चर्च कॉलेज कोलकाता (1830) – अलेक्जेंडर डफ द्वारा स्थापित इसने पश्चिमी पाठ्यक्रम पर आधारित उच्च शिक्षा की शुरुआत की।
- मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज (1837) दक्षिण भारत में उच्च शिक्षा को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- सेंट जेवियर्स कॉलेज, कोलकाता (1860) जेसुइट मिशनरियों द्वारा स्थापित यह उच्च शिक्षा के लिए एक प्रतिष्ठित संस्थान बन गया।
- विल्सन कॉलेज, मुंबई (1832) – स्कॉटिश मिशनरियों द्वारा स्थापित, इसने पश्चिमी भारत में उच्च शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

## महिलाओं के लिए शिक्षा
ईसाई शिक्षण संस्थानों से पहले भारत के कई हिस्सों में महिला शिक्षा लगभग न के बराबर थी। मिशनरियों ने लड़कियों के लिए पहला औपचारिक स्कूल स्थापित किया जिसमें शामिल हैं:

- बेथ्यून स्कूल कोलकाता (1849) – जॉन इलियट ड्रिंकवाटर बेथ्यून द्वारा स्थापित यह महिलाओं की शिक्षा के लिए समर्पित भारत का पहला संस्थान बन गया।
- सारा टकर कॉलेज, तमिलनाडु (1895) – भारत के सबसे पुराने महिला कॉलेजों में से एक।
- प्रेसीडेंसी गर्ल्स स्कूल चेन्नई (1837) – भारतीय महिलाओं की शिक्षा के लिए ईसाई मिशनरियों द्वारा स्थापित।

ईसाई शिक्षण संस्थानोंने विधवाओं और निचली जातियों की महिलाओं की शिक्षा को भी प्रोत्साहित किया, जो उस समय के लिए क्रांतिकारी था।

**स्थानीय शिक्षा को बढ़ावा देना**

ईसाई शिक्षण संस्थानों ने भारतीय भाषाओं में शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने पाठ्यपुस्तकों का में अनुवाद किया और सीखने की सुविधा के लिए व्याकरण की किताबें लिखीं।

उन्होंने तमिल, बंगाली, मराठी और अन्य भाषाओं में किताबें प्रकाशित करने के लिए प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की। विलियम कैरी जिन्हें "आधुनिक बंगाली गद्य के जनक" के रूप में जाना जाता है ने बंगाली लिपि और व्याकरण को विकसित करने में मदद की।

**मुद्रण और प्रकाशन**

ईसाई शिक्षण संस्थानों ने भारत के कुछ पहले प्रिंटिंग प्रेस स्थापित किए और शब्दकोश, व्याकरण की किताबें और धार्मिक ग्रंथों सहित शैक्षिक सामग्री प्रकाशित की। विलियम कैरी ने सेरामपुर प्रेस (1800) की स्थापना की जिसने कई भारतीय भाषाओं में किताबें छापीं। अलेक्जेंडर डफ ने साक्षरता और जागरूकता फैलाने के लिए बंगाली में समाचार पत्रों और पत्रिकाओं को बढ़ावा दिया।

ईसाई शिक्षण संस्थानों द्वारा स्थापित कुछ प्रमुख शैक्षणिक संस्थान और उनकी विशेषताएं–

| संस्थान का नाम | स्थापना वर्ष | स्थान | संस्थापक | प्रमुख योगदान | प्रमुख विशेषता |
|---|---|---|---|---|---|
| सीरमपुर कॉलेज | 1818 | सीरमपुर– (पश्चिम बंगाल) | विलियम केरी– जॉशुआ मार्शमैन– विलियम वार्ड | भारत का पहला डिग्री कॉलेज– भाषायी विकास– बाइबिल अनुवाद– प्रिंटिंग प्रेस | भारत का पहला डिग्री कॉलेज– भाषाई और धार्मिक शिक्षा का केंद्र |
| मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज (MCC) | 1837 | चेन्नई– (तमिलनाडु) | जॉन एंडरसन | महिला शिक्षा– उच्च गुणवत्ता वाला रेसिडेंशियल कॉलेज– साहित्यिक व सामाजिक नेतृत्व | महिला शिक्षा– रेसिडेंशियल मॉडल– डिबेटिंग और समाजसेवा |
| सेंट स्टीफेंस कॉलेज | 1881 | दिल्ली | कैम्ब्रिज मिशन (Church Missionary Society) | राजनीति– प्रशासन और अकादमिक क्षेत्र में अग्रणी शिक्षण केंद्र | प्रशासनिक और राजनीतिक नेतृत्व के लिए प्रसिद्ध |
| सेंट ज़ेवियर कॉलेज | 1860 | कोलकाता | जेसुइट मिशनरी | वाणिज्य और विज्ञान शिक्षा– सांस्कृतिक विविधता– नैतिक शिक्षा | वाणिज्य और विज्ञान में उत्कृष्टता– समावेशी संस्कृति |
| लोयोला कॉलेज | 1925 | चेन्नई– (तमिलनाडु) | जेसुइट मिशनरी | नैतिक शिक्षा– बहुभाषी शिक्षा– तमिल साहित्य में योगदान | नैतिक शिक्षा और सामाजिक न्याय के मूल्यों पर आधारित आधुनिक पाठ्यक्रम |

**संदर्भ सूची**


1. फर्थ, सिरिल ब्रूस. भारत चर्च इतिहास का एक परिचय. मद्रासरू क्रिश्चियन लिटरेचर सोसाइटी, 1968.
2. घोष, जोसेफ एच. "भारतीय ईसाई और होम रूल." सोशल रिफॉर्म एडवोकेट 29 (सितंबर 1917): 419.
3. ह्यूटन, ग्राहम. दरिद्रता और निर्भरता. मद्रासरू क्रिश्चियन लिटरेचर सोसाइटी, 1983.
4. जॉन, बीनू. राष्ट्र निर्माण में ईसाई योगदान. दिल्ली: ISPCK, 2004.
5. कुमार, नीता. "मिशनरियों ने एकमात्र विकल्प प्रदान किया." इकोनॉमिक टाइम्स (बैंगलोर) 19 (सितंबर 1993): 16.
6. नेहरू, जवाहरलाल. भारत की खोज. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1981.
7. नील, स्टीफन. मिशन के लिए आह्वान. फिलाडेल्फिया: फोर्ट्रेस प्रेस, 1970.
8. रावत, पी. एल. भारतीय शिक्षा का इतिहास. भोपाल: राम प्रसाद एंड संस, 1984.
9. शेरिंग, एम. ए. भारत में प्रोटेस्टेंट मिशन का इतिहास. लंदन: ट्रबनर कंपनी, 1875.
10. आईएएस तैयारी के लिए एक संस्थान वाजिराम और रवि के ब्लॉग
11. माइकल ब्रायन. इंडिया क्रिश्चियन मीडिया हैंड बुक, गिफ्ट्स ऑफ इंडिया, मुंबई, 1999, 5.
12. आईएमए रिसर्च टीम, लैंग्वेजेज ऑफ इंडिया, आईएमए, द्वितीय संस्करण, चेन्नई, 1997, 5 पृष्ठ.
13. दास जूलियन एस. क्रिश्चियन एंड बंगाली, एस. इन्नासी और
14. वी. जयदेवन (संपादक), क्रिश्चियन कंट्रीब्यूशन टू इंडियन
15. थियोलॉजिकल कॉलेज एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट, मद्रास, 1994, 24 पृष्ठ.
16. जॉर्ज टिमोथी. वफादार गवाहरू जीवन और विलियम कैरी का मिशन, न्यू होप, अलबामा, 1991,
17. थेक्कदथ जोसेफ एसबीडी। पीएच.डी., ईसाई धर्म का इतिहास
18. वेंकटचारी पी.एन. तमिल, चटर्जी (सं.) में, भारत की सांस्कृतिक विरासत, 5, 613पृ.
19. रमणी सारदा, ईसाई और हिंदी में ईसाई योगदान भारतीय भाषाओं और साहित्य में, 5, 58पृ.
20. भारतीय भाषाओं और साहित्य में ईसाई योगदान, गुरुकुल लूथरन थियोलॉजिकल कॉलेज